Literacy for a Billion

Movie: Chaudhavin Ka Chand
Year: 1960

Song: Chaudhavin Ka Chand
Lyricist: Shakeel Badayuni

हूँ...

चौदवीं का चाँद हो
या आफ़ताब हो
जो भी हो तुम
ख़ुदा की क़सम
लाजवाब हो

चौदवीं का चाँद हो
या आफ़ताब हो
जो भी हो तुम
ख़ुदा की क़सम
लाजवाब हो

चौदवीं का चाँद हो

ज़ल्फ़ें हैं जैसे काँधों पे
बादल झुके हुए
ज़ल्फ़ें हैं जैसे काँधों पे
बादल झुके हुए

आँखें हैं जैसे मय के
प्याले भरे हुए
मस्ती हैं जिसमें प्यार की
तुम वो शराब हो

चौदवीं का चाँद हो
या आफ़ताब हो
जो भी हो तुम

ख़ुदा की क़सम
लाजवाब हो
चौदवीं का चाँद हो
चेहरा है जैसे झील में
हँसता हुआ कँवल
चेहरा है जैसे झील में
हँसता हुआ कँवल

या ज़िन्दगी के साज़ पे
छेड़ी हुई ग़ज़ल
जाने बहार तुम किसी
शाइर का ख़्वाब हो

चौदवीं का चाँद हो
या आफ़ताब हो
जो भी हो तुम
ख़ुदा की क़सम
लाजवाब हो
चौदवीं का चाँद हो

होंठों पे खेलती है
तबस्सुम की बिजलियाँ
होंठों पे खेलती है
तबस्सुम की बिजलियाँ

सजदे तुम्हारी राह में
करती है कहकशाँ
दुनिया-ए-हुस्नो-इश्क़ का
तुम ही शबाब हो

चौदवीं का चाँद हो
या आफ़ताब हो
जो भी हो तुम

ख़ुदा की क़सम
लाजवाब हो

Disclaimer: PlanetRead does not own these lyrics and is not using them for any commercial purpose. For over 20 years, PlanetRead has been subtitling Bollywood songs for mass literacy. These lyrics are being offered as part of PlanetRead's literacy development initiative.

PlanetRead is a tax-exempt, not-for-profit: 501(c) (3) in the United States and 80(G) in India.